विज्ञप्ति

हे प्रभो! यह तेरापंथ

एक प्रति - 10 रु.
एक वर्ष - 300 रु.
पन्द्रह वर्ष - 3100 रु.

तेरापंथ की केन्द्रीय गतिविधियों का सर्वाधिक लोकप्रिय साप्ताहिक मुखपत्र

विज्ञप्ति (साप्ताहिक) : वर्ष 25 : अंक 23 : नई दिल्ली : 30 अगस्त - 5 सितम्बर 2019

परम पावन महातपस्वी शांतिदूत अहिंसा यात्रा प्रणेता आचार्यश्री महाश्रमणजी आदि ठाणा-१७७ बेंगलुरु में सानंद चातुर्मासिक प्रवास कर रहे हैं। धर्म प्रभावना उत्तरोत्तर विकासोन्मुख है। पूज्यप्रवर की मंगल सन्निधि में पर्वाधिराज पर्युषण के सभी कार्यक्रम आध्यात्मिक उल्लास के साथ समायोजित हो रहे हैं। पूज्यप्रवर के बेंगलुरु पदार्पण के उपरान्त आचार्यप्रवर की मंगल सन्निधि में तीस से अधिक मासखमण और उससे अधिक दिनों की तपस्याएं हो चुकी हैं। तपस्या का यह क्रम निरंतर प्रवर्धमान है।

परम श्रद्धेय आचार्यश्री महाश्रमण बेंगलुरु में

मोह को कृश बनाओ

१७ अगस्त। परम श्रद्धास्पद आचार्यप्रवर ने मुख्य प्रवचन कार्यक्रम के अंतर्गत 'सम्बोधि' प्रवचनमाला को आगे बढ़ाते हुए कहा--'पदार्थ उस आदमी के मन में राग-द्वेष पैदा करने में निमित्तभूत बन सकते हैं, जो छठे गुणस्थान तक स्थित है। छठे गुणस्थान के बाद ऊपर के सभी गुणस्थानों में स्थित व्यक्ति में कोई भी पदार्थ राग-द्वेष को योग रूप में उत्पन्न नहीं कर सकता।

विरक्त मनुष्य के मन में इन्द्रिय विषय प्रियता-अप्रियता को पैदा नहीं कर सकते। आदमी जिस चीज के बारे में ज्यादा सोचता है, संकल्प-विकल्प करता है, उसे उसमें आसक्ति हो सकती है। पदार्थों के प्रति संकल्प-विकल्प नहीं करने वाले साधक के आसक्ति का मूल नष्ट हो सकता है और वह साधना का क्रमशः विकास करते-करते एक दिन मोक्ष को प्राप्त हो सकता है।

जब तक आदमी में मोह का साम्राज्य रहता है, तब तक वह हिंसा, झूठ, माया, लोभ, आसक्ति आदि में यदा-कदा जा सकता है। जिसमें मोह नहीं होता, वह हिंसा, झूठ, चोरी आदि कार्य नहीं कर सकता। पापों, अपराधों के मूल में मोह स्थित है। अध्यात्म के क्षेत्र में मोह को कम करना ही मुख्य साधना होती है। सामायिक, जप, ध्यान, अनुप्रेक्षा आदि की पृष्ठभूमि में मोह को कमजोर बनाने का लक्ष्य प्रमुखतया होता है, होना चाहिए। साधना एक प्रकार का संघर्ष होता है। साधना के क्षेत्र में साधक का मुख्यतया मोह से संघर्ष चलता है। तपस्या के साथ भी मोह को कृश बनाने का लक्ष्य रहे तो वह और ज्यादा लाभदायी हो सकती है। ज्यों-ज्यों मोहनीय कर्म कमजोर होता है, त्यों-त्यों साधना निखार को प्राप्त होती है और साधक मुक्ति के निकट होता जाता है। एक दिन ऐसा भी आ सकता है कि जब उसकी आत्मा संपूर्ण मुक्ति को प्राप्त कर ले।'

परमाराध्य आचार्यप्रवर ने अपनी कृति 'महात्मा महाप्रज्ञ' के वाचनक्रम के अंतर्गत आचार्यश्री महाप्रज्ञजी के जीवन प्रसंगों को विवेचित किया। कार्यक्रम में पूज्यप्रवर के पदार्पण से पूर्व साध्वीवर्याजी का उद्‌बोधन हुआ।

सूरत से समागत श्री जितेन्द्र सालेचा ने पूज्यप्रवर से २९ दिन की तपस्या का प्रत्याख्यान किया।

तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम का १२वां राष्ट्रीय अधिवेशन

परम पूज्य आचार्यप्रवर के मंगल सान्निध्य में आज से तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम का १२वां द्विदिवसीय अधिवेशन प्रारम्भ हुआ। इस संदर्भ में टी.पी.एफ. के अध्यक्ष श्री निर्मल कोटेचा तथा सम्मेलन के संयोजक श्री सी.एल. नाहर ने अपनी भावाभिव्यक्ति दी। तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम के आध्यात्मिक पर्यवेक्षक मुनि

रजनीशकुमारजी ने अपने हृदयोद्‌गार व्यक्त किए।

कार्यक्रम में छत्तीसगढ़ उच्च न्यायालय के न्यायाधीश श्री गौतम चोरड़िया को 'टी.पी.एफ. गौरव' के रूप में सम्मानित किया गया। टी.पी.एफ. के मुख्य न्यासी श्री निर्मल चोरड़िया ने प्रशस्ति पत्र का वाचन किया। श्री गौतम चोरड़िया ने अपने कृतज्ञ भावों को अभिव्यक्ति दी।

अधिवेशन के मुख्य अतिथि पद्‌मभूषण डॉ. बी.एम. हेगड़े ने अपनी विचाराभिव्यक्ति देते हुए कहा--'आचार्यश्री महाश्रमणजी ने जैन धर्म के प्राचीन सिद्धान्तों एवं तेरापंथ के प्राचीन नियमों के बारे में जो कुछ भी कहा, वह इस २१वीं सदी में भी पूर्णतः वैज्ञानिक है। इन्द्रिय संयम, मोह का त्याग आज के वैज्ञानिक युग के लिए भी आवश्यक है। क्योंकि आदमी की मोह की प्रवृत्ति उसके शरीर में अनेक बीमारियों को जन्म देती है। आदमी अपने मोह को जितना नियंत्रित रखेगा, बीमारियों से उतना ही दूर रह सकेगा। हमारा दिमाग जितना शांत रहेगा, शरीर भी उतना स्वस्थ रहेगा। लोभ, लालच और मोह की प्रवृत्ति ही सभी बीमारियों का कारण हैं। इनके नियंत्रण से सभी शारीरिक बीमारियां भी दूर हो सकती हैं। आचार्यश्री का प्रवचन संपूर्ण मानव जाति का कल्याण करने वाला है। लोगों को आचार्यश्री की वाणी से प्रेरणा लेकर अपनी जीवनशैली को स्वस्थ बनाना चाहिए।'

साध्वीवर्याजी ने अपने उद्‌बोधन में कहा--'आज तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम से जुड़े हुए सैकड़ों लोग वार्षिक अधिवेशन के लिए उपस्थित हैं और इस अधिवेशन की थीम रखी गई है--'मैं हूं अपने भाग्य का निर्माता।' वास्तव में अपने भाग्य के निर्माता हम स्वयं हैं। जो व्यक्ति अपने जीवन का निर्माण कर लेता है, वह अपने भाग्य का निर्माण कर सकता है। उसके लिए आवश्यकता है सम्यक् पुरुषार्थ की। यदि व्यक्ति सही दिशा में सम्यक् पुरुषार्थ करता है तो वह अपने भाग्य का निर्माण कर सकता है। भाग्य के निर्माण के लिए व्यक्ति को अपने स्वभाव के परिष्कार का भी प्रयत्न करना चाहिए। जप व स्वाध्याय के माध्यम से भी व्यक्ति अपने स्वभाव को बदल सकता है। आचार्यश्री महाश्रमणजी जैसे सद्‌गुरुओं की वाणी से भी अपने स्वभाव का परिष्कार किया जा सकता है। हम आचार्यप्रवर के प्रवचनों से प्रेरणा लेकर अपने भाग्य का निर्माण कर सकते हैं।'

परम पूज्य आचार्यप्रवर ने अपने मंगल उद्‌बोधन में कहा--'मैं हूं अपने भाग्य का निर्माता' यह एक दार्शनिक बात हो सकती है। दर्शन जगत में यह एक विवादास्पद विषय भी हो सकता है। इन विवाद की बातों को छोड़कर इतना-सा सार निकाल लें कि आदमी को अपना पुरुषार्थ करना चाहिए। मनुष्य अपना सम्यक् पुरुषार्थ करता है तो वह अपना निर्माण भी कर सकता है। पुरुषार्थ हमारे हाथ में है। कई बार ऐसा लगता है कि पुरुषार्थ करने पर भी तत्काल कोई परिणाम नहीं मिल रहा है। ऐसी स्थिति में आदमी को निराश नहीं होना चाहिए। हर असफलता व्यक्ति को सफलता की दिशा में आगे बढ़ने में निमित्तभूत बन सकती है, यदि असफलता से कोई अच्छा सबक सीख लिया जाए। असफलता मानों कोई सबक सिखाने के लिए आती है। पुरुषार्थ एक ऐसा तत्त्व है, जिससे भाग्य का विधान भी हो सकता है, अपने जीवन और व्यक्तित्व का निर्माण भी हो सकता है।

तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम का बारहवां अधिवेशन आयोजित हो रहा है। समाज की इस संस्था को देखकर ऐसा लगता है, मानों यह कोई रत्नों की माला है। बौद्धिकता के भिन्न-भिन्न रत्न इसमें गुंफित हैं। बिखरे हुए मणकों का अपना कोई महत्त्व हो सकता है, किन्तु माला के रूप में पिरोए हुए मणकों का कुछ अधिक महत्त्व हो सकता है। तेरापंथ समाज में बौद्धिकता रत्न कुछ वर्षों पूर्व तक बिखरे हुए थे। तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम के माध्यम से उन रत्नों की माला बन गई है, बन रही है। इस फोरम में डॉक्टर भी हैं, वकील भी हैं, न्यायाधीश भी हैं। और भी अनेक पेशों से जुड़े हुए लोग हैं। इस प्रकार बौद्धिकता की शक्ति वाला एक सुन्दर मंच बन गया है। यह बहुत सुन्दर बात हुई है कि समाज के पास एक बौद्धिकता के बल वाली संस्था हो गई।

मुझे ऐसा लगता है कि फोरम के सदस्यों को भी इस संस्था के माध्यम से लाभ हो रहा है। वे बिखरे हुए थे, उन्हें इस संस्था के रूप में तेरापंथ समाज से गहराई से जुड़ने का अवसर मिल गया।

अधिवेशन के दौरान कितने लोगों का मिलन हो जाता है और विकास का मार्ग भी उन्हें प्राप्त हो सकता है। यह फोरम और अधिक विकास करता रहे। अब भी कई रत्न बिखरे हुए हो सकते हैं, उन रत्नों को भी इसके साथ पिरोने का प्रयास होता रहे। फोरम के सदस्य मानों इस माला के मणके हैं। यह माला सुन्दर रूप में और अधिक बड़ी से बड़ी बनती जाए तथा माला की उपयोगिता भी बढ़ती जाए। टी.पी.एफ. का अधिवेशन खूब निष्पत्तिपूर्ण हो, मंगलकामना।'

श्री गौतमजी चोरड़िया को सम्मानित-अलंकृत किया गया। न्यायाधीश के रूप में कार्य करने वाला व्यक्ति इतना धर्म से जुड़ा हुआ हो, थोड़ा आश्चर्य-सा होता है। जैसा कि कहा गया--चोरड़ियाजी बारहव्रती हैं, यह बहुत अच्छी बात है। एक ओर न्याय का इतना महत्त्वपूर्ण दायित्व इनके पास है, दूसरी ओर इतनी भक्ति, इतना श्रावकत्व इनमें है। वे कई दिनों तक गुरुकुलवास में रहकर सेवा-उपासना करते हैं। यह तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम के लिए भी गौरव की बात है कि जो व्यक्ति न्याय और धर्म दोनों से जुड़े हुए हैं, वे इस फोरम से भी संबद्ध हैं।

इनका सम्मान किया गया है। इन्हें टी.पी.एफ. के साथ जुड़ने का मौका मिला है। चोरड़ियाजी अपनी आध्यात्मिक साधना को खूब अच्छे रूप में आगे बढ़ाते रहें। इन्होंने जैसा अभी कहा कि न्यायाधीश के सामने बहुत प्रलोभन आ सकते हैं। न्याय के सामने बड़े से बड़ा प्रलोभन भी छोटी चीज होती है। चोरड़ियाजी में आध्यात्मिकता व नैतिकता के प्रति खूब निष्ठा बनी रहे।

तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम के बारहवें राष्ट्रीय अधिवेशन में ३५ शाखाओं के करीब ४२५ व्यक्ति संभागी बने। 'मैं हूं अपने भाग्य का निर्माता' थीम पर आयोजित इस सम्मेलन में संभागीजनों को परम पूज्य आचार्यप्रवर से पावन पाथेय प्राप्त हुआ। विभिन्न सत्रों में मुख्यमुनिश्री, साध्वीप्रमुखाजी और मुख्यनियोजिकाजी की प्रेरणा भी उन्हें प्राप्त हुई। मुनि कुमारश्रमणजी, तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम के आध्यात्मिक पर्यवेक्षक मुनि रजनीशकुमारजी और साध्वी चरितार्थप्रभाजी ने भी संभागियों को प्रशिक्षण दिया। अधिवेशन के दौरान इनमोबी के को-फाउण्डर श्री पीयूष शाह, एग्नेस के मैनेजिंग पार्टनर श्री मनीष दुगड़, टी बोक्स के फाउण्डर श्री कौशल दुगड़, विंग कमाण्डर श्री चेतन जैन, टी.पी.एफ. के पूर्व अध्यक्ष श्री संजय धारीवाल, डॉ. बलवंत चोरड़िया, उपाध्यक्ष श्री नवीन पारख, श्री नवीन चोरड़िया, डॉ. कमलेश नाहर, श्री श्रील लूंकड़, श्री विक्रम कोठारी, श्रीमती जया राखेचा, श्रीमती मनोज पटावरी, श्री कैलाश झाबक, महामंत्री श्री सुशील चोरड़िया, श्री संजय सुराणा, श्री पुष्पराज व श्री विवेक बरड़िया आदि के भी वक्तव्य हुए।

पटना से समागत श्री तनसुख बैद ने अपनी लघु कृति 'बुढ़ापा अभिशाप नहीं, वरदान है' पूज्यप्रवर के समक्ष लोकार्पित की।

भारत सरकार के केन्द्रीय जलशक्ति मंत्री श्री गजेन्द्रसिंह शेखावत ने आज पूज्यप्रवर के दर्शन किए और पूज्यप्रवर से पावन पथदर्शन प्राप्त किया।

क्यों होता है धार्मिक दुःखी और अधार्मिक सुखी

१८ अगस्त। परम पूज्य आचार्यप्रवर ने मुख्य प्रवचन कार्यक्रम के दौरान 'सम्बोधि' ग्रन्थाधारित अपने पावन प्रवचन में कहा--'दार्शनिक, धार्मिक सिद्धांतों में आत्मवाद का सिद्धांत है। लोकवाद का भी सिद्धांत है। आत्मवाद में आत्मा के बारे में और लोकवाद में लोक (दुनिया) के बारे में वर्णन प्राप्त होता है। आत्मवाद का सिद्धांत बताता है कि हमारी आत्मा स्थायी है, शाश्वत है। वह हमेशा थी, है और हमेशा रहेगी। पर्याय परिवर्तन

भले हो, किन्तु आत्मा शाश्वत रूप में रहती है। आत्मवाद के साथ पुनर्जन्म का सिद्धांत भी जुड़ा हुआ है। संसारी अवस्था में आत्मा एक जन्म को छोड़कर दूसरे जन्म को ग्रहण कर लेती है। इस प्रकार की अनेक बातें आत्मवाद में बताई गई हैं। आत्मवाद के साथ कर्मवाद का सिद्धांत भी जुड़ा हुआ है। आदमी जैसी करणी करता है, वैसा ही फल उसे मिल जाता है। अच्छे कर्मों का फल अच्छे रूप में और बुरे कर्मों का फल बुरे रूप में मिलता है।

धार्मिक व्यक्ति दुःखी भी हो सकता है और अधार्मिक व्यक्ति सुखी भी हो सकता है, लेकिन समता, त्याग और संयम से युक्त धार्मिक व्यक्ति जितना शांति से रह सकता है, पापी व्यक्ति के लिए उतना शांति में रहना कठिन है। बेईमानी से भौतिक सुख-सुविधा के साधन तो जुटाए भी जा सकते हैं, किन्तु उससे शांति की प्राप्ति मुश्किल है। ईमानदार व्यक्ति कम भौतिक सुविधाओं में भी शांति में रह सकता है। दूसरी बात है कि एक व्यक्ति ने इस जन्म में ज्यादा पाप नहीं किए, किन्तु वह दुर्घटनाग्रस्त हो गया या उसका पुत्र छोटी अवस्था में कालधर्म को प्राप्त हो गया या उसके शारीरिक बीमारी उत्पन्न हो गई तो यह उसके अतीत अर्थात् पूर्व जन्मों में किए गए पापों का फल हो सकता है। दूसरा व्यक्ति इस जन्म में अधार्मिक है, किन्तु भौतिक दृष्टि से सुविधा सम्पन्न है, इसका अर्थ है यह उसके पूर्वकृत सुकृत का फल है। वह आज जो पाप कर रहा है, उसका फल उसे आगे कभी मिल सकेगा।

एक व्यक्ति आकाश में पत्थर उछालने के साथ यह बोलता है कि भविष्य में कभी भी पत्थर नहीं फेंकूंगा, किन्तु जो पत्थर उसने उछाल दिया, वह तो नीचे गिरेगा ही। इसी प्रकार आज जो पाप कर्म का त्याग करता है, उसने पिछले जन्म में जो पाप किए हैं, उनका फल तो भोगना ही होगा। आज जो वह धर्म कर रहा है, उसका फल भविष्य में कभी मिल सकेगा। इसलिए कर्म फल के संदर्भ में केवल इसी जन्म को नहीं देखना चाहिए, पिछले जन्मों पर भी ध्यान देना चाहिए।'

गत रविवार की भांति आज भी पूज्यप्रवर के प्रवचन के पश्चात् साधु-साध्वियों तथा ज्ञानशाला के ज्ञानार्थियों ने आचार्यप्रवर के समक्ष अपनी जिज्ञासाएं प्रस्तुत कीं। आचार्यप्रवर ने उनके समाधान प्रदान किए। जिज्ञासा-समाधान का यह क्रम काफी रोचक रहा।

ज्ञानशाला दिवस और पूर्व ज्ञानार्थी सम्मेलन का आयोजन

आज परम पूज्य आचार्यप्रवर की मंगल सन्निधि में तेरापंथी सभा, बेंगलुरु के तत्त्वावधान में ज्ञानशाला दिवस और बेंगलुरु ज्ञानशाला के पूर्व ज्ञानार्थियों का सम्मेलन समायोजित हुआ।

इस अवसर पर महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाजी ने अपने उद्‌बोधन में कहा--'परम पूज्य आचार्यप्रवर ने आज साधु-साध्वियों और विशेष रूप से बच्चों को अपनी जिज्ञासाओं, अपने कुतूहल व संशयों को प्रस्तुत करने का जो अवसर प्रदान किया, यह ज्ञान प्राप्ति और ज्ञान को विकसित करने का अच्छा उपाय है। ज्ञान प्राप्त करने का मतलब है अच्छा जीवन जीने की प्रक्रिया का शुभारम्भ करना। ज्ञान रूपान्तरण की एक प्रक्रिया है और ज्ञान को प्राप्त करने के लिए सबसे अच्छा काल बचपन और कैशोर्य है।

तेरापंथ धर्मसंघ में ज्ञानशालाओं के माध्यम से बच्चों के संस्कार निर्माण का कार्य हो रहा है। बच्चे बड़े उत्साह के साथ ज्ञानशाला में आते हैं और कुछ सीखते हैं। ज्ञानशाला की प्रशिक्षिकाएं भी बहुत श्रम करती हैं। ऐसा लगता है कि उनमें भी एक जुनून है, जज्बा है। अक्सर गृहस्थों के घर में शनिवार और रविवार को बहुत काम रहता है, लेकिन वे अपने उन कामों को गौण करके भी ज्ञानशाला को प्राथमिकता देती हैं और बच्चों को सिखाने के लिए कितना श्रम करती हैं। ज्ञानशाला के माध्यम से बच्चे धार्मिक ज्ञान प्राप्त कर सकते हैं, व्यावहारिक ज्ञान भी सीख सकते हैं और उनके जीवन में गुणों का संचरण भी हो सकता है। इस दृष्टि से मानना चाहिए कि ज्ञानशाला का उपक्रम बहुत अच्छा है।

बच्चों में बहुत संभावनाएं होती हैं। उन संभावनाओं को उजागर करने के लिए अभिभावकों को भी जागरूक रहना चाहिए और ज्ञानशाला की प्रशिक्षिकाओं को भी जागरूक रहना चाहिए। ज्ञानशाला के ज्ञानार्थी बच्चे अपने जीवन में ज्ञान चेतना का और अधिक विकास करें। उन्हें केवल पाठ्य पुस्तकों का ज्ञान ही नहीं, व्यावहारिक और धार्मिक ज्ञान में भी विकसित बनाना चाहिए।'

परम पूज्य आचार्यप्रवर ने ज्ञानशाला दिवस के संदर्भ में कहा--'ज्ञानशाला एक बहुत ही सुन्दर, महत्त्वपूर्ण और प्रशस्त कार्यक्रम है। छोटे बच्चों को ज्ञानशाला के माध्यम से जैन धर्म, तत्त्वज्ञान, आदि की जानकारी प्राप्त हो सकती है और उसके साथ वे अच्छे संस्कार भी प्राप्त कर सकते हैं। जो लोग ज्ञानशाला के उपक्रम को आगे बढ़ाने में अपना योगदान देते हैं, वे मानों बाल पीढ़ी की सेवा करते हैं। कितने-कितने व्यक्ति ज्ञानशाला में अपनी सेवाएं दे रहे हैं। ज्ञानशाला की संख्या को भी यथासंभव, यथौचित्य बढ़ाने का प्रयास होना चाहिए और साथ में ज्ञानार्थियों की संख्या भी बढ़ाने का प्रयत्न होना चाहिए। ज्ञानशाला में प्रशिक्षण देने वाले प्रशिक्षकों की संख्या भी यथापेक्षा पुष्ट रहनी चाहिए। ज्ञानवर्धन और संस्कार निर्माण के सुन्दर माध्यम के रूप में ज्ञानशाला को देखा जा सकता है। महासभा-सभाओं के तत्त्वावधान में ज्ञानशालाएं संचालित हो रही हैं। यह उपक्रम खूब अच्छे रूप में चलता रहे, खूब अच्छा विकास करे, यह काम्य है।'

पूर्व ज्ञानार्थी सम्मेलन के संदर्भ में पूज्यप्रवर ने कहा--'आज बेंगलुरु के पूर्व ज्ञानार्थियों का भी सम्मेलन हो रहा है। कई साधु-साध्वियां भी ऐसे हैं, जिन्होंने पहले ज्ञानशाला में ज्ञानार्जन किया है। वे भी यथौचित्य यह ध्यान दें कि ज्ञानशालाओं का और अधिक विकास कैसे हो?

ज्ञानशाला के पूर्व ज्ञानार्थी उपासक श्रेणी में नहीं आए हों और उनके अनुकूलता हो तो वे उपासक श्रेणी से जुड़कर अपनी सेवाएं दें तो एक अच्छा कार्य हो सकता है। वे ज्ञान, प्रेक्षाध्यान आदि के विभिन्न उपक्रमों से जुड़कर समाज को अपनी सेवाएं दें तो अच्छी बात हो सकती है और पूर्व ज्ञानार्थियों की अच्छी उपयोगिता भी हो सकती है।'

बेंगलुरु ज्ञानशाला के पूर्व ज्ञानार्थियों ने कव्वाली और गीत प्रस्तुत किए। ज्ञानशाला के वर्तमान ज्ञानार्थियों ने अपनी प्रस्तुति दी। ज्ञानशाला की प्रशिक्षिकाओं ने गीत का संगान किया। चतुर्मास प्रवास व्यवस्था समिति के अध्यक्ष श्री मूलचंद नाहर, तेरापंथी सभा के मंत्री श्री प्रकाश लोढ़ा, बेंगलुरु ज्ञानशाला के सहसंयोजक श्री गौतम डोसी तथा ज्ञानशाला के कर्नाटक आंचलिक संयोजक श्री माणकचंद संचेती ने अपनी भावाभिव्यक्ति दी।

बेंगलुरु ज्ञानशाला के पूर्व ज्ञानार्थी सम्मेलन में करीब २७० व्यक्ति संभागी बने। संभागियों को साध्वीवर्याजी ने भी उत्प्रेरित किया। विभिन्न सत्रों में साध्वी कंचनप्रभाजी, मुनि कुमारश्रमणजी और मुनि सत्यकुमारजी ने प्रशिक्षण दिया। इस सम्मेलन में प्रशिक्षक श्री हेमन्त छाजेड़, श्री राजेश कोठारी तथा प्रशिक्षिका श्रीमती सरोज पिपाड़ा के भी वक्तव्य हुए।

मुक्ति का मार्ग संवर और निर्जरा

१६ अगस्त। आज प्रातः परम पूज्य आचार्यप्रवर आचार्य तुलसी महाप्रज्ञ चेतना सेवाकेन्द्र ट्रस्ट द्वारा संचालित 'जय तुलसी विद्या विहार' में पधारे। पूज्यप्रवर की मंगल सन्निधि में वहां समायोजित संक्षिप्त कार्यक्रम में विद्यालय के विद्यार्थियों, प्रबन्धकों आदि ने अपनी-अपनी प्रस्तुति दी। पूज्यप्रवर ने उपस्थित लोगों को पावन प्रेरणा प्रदान की।

मुख्य प्रवचन कार्यक्रम के अंतर्गत परम पूज्य आचार्यप्रवर ने 'सम्बोधि' ग्रन्थाधारित अपने पावन प्रवचन में कहा--'जिस आदमी के जीवन में संवर की साधना होती है, वह धार्मिक व्यक्ति होता है। संवर न भी हो, किन्तु जो निर्जरा करता है, वह भी कुछ अंशों में धार्मिक व्यक्ति हो सकता है।

धर्म के दो प्रकार निरुपित हैं--संवर और निर्जरा। इन दो प्रकारों में सारा धर्म समाहित हो जाता है। संवर अर्थात् कर्मों के आने के मार्ग को रोकना और निर्जरा अर्थात् पूर्वबद्ध कर्मों को आंशिक रूप में नष्ट करना। संवर के कारण नए सिरे से कर्मों का प्रवेश नहीं होगा और पहले बंधे हुए कर्म निर्जरा से नष्ट हो जाएंगे तो एक दिन आत्मा पूर्णरूपेण कर्मों से मुक्त बन जाएगी, शुद्ध बन जाएगी।'

आचार्यप्रवर ने 'महात्मा महाप्रज्ञ' का वाचन करते हुए प्रसंगवश कहा--'मैं एक वर्ष में दो बार मस्तक का लुंचन करवाता हूं। मेरे मस्तक के करीब ६० लुंचन हो चुके हैं। मुंह का लुंचन मैं एक वर्ष में प्रायः पांच बार करता हूं।'

न एकान्त भेदवादी बनें और न ही एकान्त अभेदवादी

२० अगस्त। परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने मुख्य प्रवचन कार्यक्रम के दौरान 'सम्बोधि' ग्रन्थ पर आधारित अपने पावन प्रवचन में कहा--'हमारी दुनिया में ज्ञान एक पावन चीज है। ज्ञान का बहुत महत्त्वपूर्ण स्थान है। सबका ज्ञान समान नहीं होता। ज्ञान ज्ञान में अंतर होता है। ज्ञान सामान्य का भी हो सकता है और विशेष का भी हो सकता है। सामान्य और विशेष दोनों को जानना चाहिए। दोनों का अपना-अपना महत्त्व है।

शरणसूत्र (मंगलपाठ) में 'आयरियं सरणं पवज्जामि' और 'उवज्झायं सरणं पवज्जामि' नहीं हैं, जबकि नमस्कार महामंत्र में आचार्य और उपाध्याय को पृथक्-पृथक् स्थान दिया गया है, वहां विशेष दृष्टि का उपयोग किया गया है, ऐसा प्रतीत हो रहा है। सामान्य दृष्टि से देखें तो आचार्य और उपाध्याय भी साधु हैं, इसलिए 'साहू सरणं पवज्जामि' में आचार्य और उपाध्याय भी समाविष्ट हो सकते हैं। सामान्य और विशेष को भेद और अभेद अथवा द्रव्य और पर्याय भी कहा जा सकता है।

ज्ञान की गहराई में जाने के लिए भेद को भी समझना अपेक्षित है। भेद को समझने से हमारा ज्ञान और भी स्पष्ट व गहरा हो सकता है। भेद को जाने बिना कई बार कार्य चलना भी कठिन हो सकता है। अभेद अच्छा है, किन्तु भेद की भी अपनी उपयोगिता होती है।

जैन दर्शन में नयवाद का सिद्धांत है। नयवाद में किसी बात का खंडन न करते हुए एक पक्ष को प्रस्तुत किया जाता है। नय के सात प्रकारों में सामान्य एवं विशेष दोनों समाहित हो जाते हैं। सात नयों में पहला है--नैगम नय। यह सामान्य और विशेष दोनों का ग्रहण करता है। सामान्य और विशेष एक-दूसरे से सर्वथा भिन्न नहीं होते। जैसे--सुखी जीव। जीव सामान्य है, किन्तु सुखी होना विशेष बात है, क्योंकि प्राणी दुःखी भी हो सकते हैं। हमें नैगम नय से यह प्रेरणा लेनी चाहिए कि हम एकान्त सामान्यवादी (अभेदवादी) भी न बनें और एकान्त विशेषवादी (भेदवादी) भी न बनें, दोनों को समझने वाले बनें।'

पूज्यप्रवर ने प्रसंगवश कहा--'हमारे धर्मसंघ में उपाध्याय अलग से नहीं होते। आचार्य उपाध्याय का भी दायित्व संभालते हैं। परम पूज्य आचार्य भिक्षु ने प्रसंगवश फरमाया कि तेरापंथ धर्मसंघ में गणी, गणावच्छेदक आदि सातों पदों को मैं ही संभालता हूं। वह परंपरा आज भी चली आ रही है।'

कार्यक्रम में विशेष रूप से उपस्थित बल्लारी स्थित श्री कल्याण संस्थान मठ, कम्मरचेडु के मठाधीश्वर श्री कल्याण स्वामी ने कहा--'आचार्यश्री महाश्रमणजी भगवान के रूप में जगह-जगह पधारकर लोगों को अर्हतों की वाणी का लाभ प्रदान कर रहे हैं। हम आपके इस प्रवचन पंडाल में देख रहे हैं कि लोग कितनी तन्मयता से आपकी वाणी का श्रवण कर रहे हैं। आप इतनी लम्बी और विशाल पदयात्रा कर रहे हैं। आपको न घर की चिंता है और न हीं आप में खाने के प्रति लोलुपता है। आप में तो सदैव लोगों के कल्याण की कामना रहती है। आप जैसे महान संत केवल जैन धर्म में ही प्राप्त हो सकते हैं, उनमें भी आप सबसे विशिष्ट हैं। आपकी यह पदयात्रा कितनी कठिनाइयों भरी है। मैं तो आपको साक्षात् भगवान के रूप में मानता हूं। आपकी

वाणी से निकलने वाला हर शब्द देववाणी की तरह है। आपके गुरु आचार्यश्री तुलसी ने अणुव्रत का जो संदेश पूरे देश को दिया, आप भी उसे प्रसारित कर रहे हैं, जिससे व्यक्ति-व्यक्ति लाभान्वित हो रहा है। आपकी प्रेरणा से नैतिकता का प्रसार हो रहा है। आप अपनी यात्रा के दौरान बल्लारी भी पधार रहे हैं तो मेरा भी एक आग्रह है कि आप हमारे मठ में पधारें और अपनी मंगलवाणी का हम सभी को श्रवण कराएं, जिससे हम धर्म की रक्षा की प्रेरणा प्राप्त कर सकें।'

प्रवास व्यवस्था समिति-बेंगलुरु के अध्यक्ष श्री मूलचंद नाहर ने अपनी अभिव्यक्ति दी।

पूज्यप्रवर से श्रीमती चंदा पोकरणा तथा जितेन्द्र ओसवाल ने २७ दिन की तपस्या का प्रत्याख्यान किया। मुनि अनेकांतकुमारजी ने भाइयों की तेरहरंगी के संदर्भ में अपनी विचाराभिव्यक्ति दी। कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेशकुमारजी ने किया।

आज रात्रि में संस्कृत भारती के अंतर्गत 'संभाषण संदेश' पत्रिका के सह संपादक डॉ. सचिन कठाले, दक्षिण कर्नाटक प्रान्त कोषाध्यक्ष श्री मधुसूदन देसाई, विजयनगर-बेंगलुरु के संयोजक श्री शिरीष धारी, स्वर्णभूमि गोशाला के प्रमुख श्री राघवेन्द्र ने पूज्यप्रवर के दर्शन किए। आचार्यप्रवर का उनसे संस्कृत भाषा में वार्तालाप हुआ।

ज्ञानशाला प्रशिक्षक सम्मेलन आयोजित

आज से परम पूज्य आचार्यप्रवर की मंगल सन्निधि में जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा के तत्त्वावधान में त्रिदिवसीय ज्ञानशाला प्रशिक्षक सम्मेलन का शुभारम्भ हुआ। आचार्यप्रवर ने इस संदर्भ में कहा--'ज्ञानशाला एक उपयोगितापूर्ण उपक्रम है। बालपीढ़ी को कल्याण की दिशा में आगे बढ़ने में निमित्त बन सके, ऐसा उपक्रम है। ज्ञानशाला के ज्ञानार्थियों को प्रशिक्षण देने के लिए प्रशिक्षक वर्ग भी अपेक्षित होता है। प्रशिक्षक खूब अच्छी सेवा देते रहें और अपने ज्ञान को पुष्ट करते रहें।'

बेंगलुरु ज्ञानशाला की प्रशिक्षिकाओं ने गीत का संगान किया। महासभा के ज्ञानशाला प्रकोष्ठ के संयोजक श्री सोहनलाल चोपड़ा तथा महासभा के उपाध्यक्ष श्री कन्हैयालाल गिड़िया ने अपने हृदयोद्गार व्यक्त किए।

परम पूज्य आचार्यप्रवर की मंगल सन्निधि में जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा के तत्त्वावधान में आयोजित त्रिदिवसीय ज्ञानशाला प्रशिक्षक सम्मेलन में करीब ३१५ व्यक्ति संभागी बने। सम्मेलन के दौरान संभागियों को परम पूज्य आचार्यप्रवर से पावन पाथेय प्राप्त हुआ। विभिन्न सत्रों में साध्वी सुमतिप्रभाजी, साध्वी प्रबुद्धयशाजी, साध्वी राजुलप्रभाजी, साध्वी शरदयशाजी, साध्वी ऋद्धिप्रभाजी, साध्वी चारित्रयशाजी, साध्वी सिद्धार्थप्रभाजी, साध्वी समताप्रभाजी, साध्वी चरितार्थप्रभाजी, साध्वी प्रांजलप्रभाजी, साध्वी वैभवप्रभाजी और साध्वी वीरप्रभाजी ने प्रशिक्षण दिया। महासभा के अंतर्गत ज्ञानशाला प्रकोष्ठ के राष्ट्रीय संयोजक श्री सोहनराज चोपड़ा, केन्द्र परीक्षा व्यवस्थापक श्री सुरेन्द्र लूणिया, श्री आसकरण आंचलिया, कर्नाटक आंचलिक संयोजक श्री माणकचंद संचेती, श्रीमती नीता गादिया आदि के भी वक्तव्य हुए।

२१ अगस्त। परमाराध्य आचार्यप्रवर ने मुख्य प्रवचन कार्यक्रम के दौरान 'सम्बोधि' ग्रंथाधारित अपने पावन प्रवचन में संवर और निर्जरा के महत्त्व को विवेचित किया।

पूज्यप्रवर ने अपनी कृति 'महात्मा महाप्रज्ञ' के वाचनक्रम को आगे बढ़ाते हुए आचार्यश्री महाप्रज्ञजी के जीवन से संबंधित प्रसंग सुनाए।

श्रीमती बिन्दु रायसोनी और श्रीमती मंजू बोहरा ने पूज्यप्रवर से ३१ दिन की तपस्या का प्रत्याख्यान किया।

ज्ञानशाला दीक्षांत समारोह का समायोजन

आज मध्याह्न में आचार्यप्रवर की मंगल सन्निधि में जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा के तत्त्वावधान में

ज्ञानशाला दीक्षांत समारोह समायोजित हुआ। इस समारोह में महासभा के ज्ञानशाला प्रकोष्ठ द्वारा वर्ष २०१६ में स्नातक उत्तीर्ण १९७ प्रशिक्षकों को प्रमाण पत्र व मोमेन्टो भेंट किए गए।

इस अवसर पर परमाराध्य आचार्यप्रवर ने अपने मंगल उद्‌बोधन में कहा--'जिस समाज के बच्चे अच्छे होते हैं, सुसंस्कारी, सुशिक्षित होते हैं, आशा की जा सकती है कि उस समाज का भविष्य अच्छा बन सकेगा। जिस समाज के बच्चों को संस्कार देने का प्रयास नहीं हो रहा है, उसका भविष्य धुंधला हो सकता है। तेरापंथ समाज में ज्ञानशाला का जो क्रम शुरू हुआ, चल रहा है, वह संभवतः निखार की ओर आगे बढ़ रहा है, अच्छा क्रम चल रहा है। स्थान-स्थान पर देखते हैं, बच्चों की अच्छी तैयारी के साथ प्रस्तुतियां होती हैं। ज्ञानशाला का क्रम अच्छा रहे, इसके लिए अपेक्षित है कि संचालन, प्रबन्धन पक्ष भी अच्छा रहे और प्रशिक्षण देने वाले व्यक्ति भी खूब प्रशिक्षित हों, वे अच्छे तरीके से कार्य करें। ऐसा लगता है कि प्रशिक्षक अपना विकास करके काफी अच्छा श्रम करते हैं। ज्ञानशाला का यह उपक्रम बहुत ही उपयोगी और महत्त्वपूर्ण है, समाज भी इस पर बहुत ध्यान दे रहा है, ऐसा प्रतीत हो रहा है। तेरापंथी महासभा-सभाओं के साथ अन्य संस्थाओं का भी योगदान इसमें हो सकता है।

प्रशिक्षकजन अपने ज्ञान को और अधिक पुष्ट बनाने का प्रयास करते रहें। प्रबन्धक लोग भी समय-समय पर यह ध्यान देते रहें कि ज्ञानशाला में और अधिक निखार कैसे आ सकता है। प्रशिक्षकों का यह भी दायित्व है कि ज्ञानार्थियों में ज्ञान और सत्संस्कारों के प्रति आकर्षण बना रहे। ज्ञानशाला से जुड़े हुए केन्द्रीय, आंचलिक और स्थानीय स्तर पर कार्य करने वाले कार्यकर्ता और प्रशिक्षक ज्ञानशाला के आध्यात्मिक विकास का कार्य करते रहें। ज्ञानशाला के माध्यम से ज्ञानदान के रूप में अच्छी सेवा हो रही है, यह सेवा अच्छे रूप में चलती रहे।'

पर्युषण यात्रा

समणीवृंद (विदेश)

१. समणी नियोजिका मल्लिप्रज्ञाजी, समणी मननप्रज्ञाजी, समणी प्रणवप्रज्ञाजी	काठमाण्डौ (नेपाल)
२. समणी अक्षयप्रज्ञाजी, समणी सम्क्यत्वप्रज्ञाजी	सेक्रामेन्टो (अमेरिका)
३. समणी प्रतिभाप्रज्ञाजी, समणी अमलप्रज्ञाजी	लंदन (नवनात सेंटर)
४. समणी सन्मतिप्रज्ञाजी, समणी जयंतप्रज्ञाजी	लॉसएन्जेलस (अमेरिका)
५. समणी शीलप्रज्ञाजी, समणी अमृतप्रज्ञाजी	जकार्ता (इन्डोनेशिया)
६. समणी ऋजुप्रज्ञाजी, समणी श्रेयसप्रज्ञाजी	बर्मिंघम (लंदन)
७. समणी सत्यप्रज्ञाजी, समणी रोहिणीप्रज्ञाजी	कैलिफोर्निया (अमेरिका)
८. समणी विपुलप्रज्ञाजी, समणी सुमनप्रज्ञाजी	जैन विश्व भारती सेंटर (लंदन)

समणीवृंद (भारत)

१. समणी स्थितप्रज्ञाजी, समणी अर्हतप्रज्ञाजी	नागपुर
२. समणी कुसुमप्रज्ञाजी, समणी शरदप्रज्ञाजी	ब्यावर
३. समणी मंजुप्रज्ञाजी, समणी स्वर्णप्रज्ञाजी	किशनगढ़
४. समणी विनीतप्रज्ञाजी, समणी जगतप्रज्ञाजी, समणी पूर्णप्रज्ञाजी	पीलीबंगा
५. समणी मंजुलप्रज्ञाजी, समणी आदर्शप्रज्ञाजी	गंगापुर
६. समणी कांतिप्रज्ञाजी, समणी हिमांशुप्रज्ञाजी	सिलीगुड़ी
७. समणी श्रद्धाप्रज्ञाजी, समणी ख्यातिप्रज्ञाजी	सिन्धनूर

मुमुक्षुवृंद

१. मुमुक्षु चंदनबाला, मुमुक्षु निशा, मुमुक्षु प्रेक्षा, मुमुक्षु रोशनी	नोहर
२. मुमुक्षु रौनक, मुमुक्षु सुमन, मुमुक्षु सुरभि, मुमुक्षु दीप्ति	रतलाम
३. मुमुक्षु श्रुति, मुमुक्षु मनीषा, बोधार्थी भाविका व मानवी	पडिहारा
४. मुमुक्षु स्नेहा, मुमुक्षु दीक्षा, मुमुक्षु संजना, मुमुक्षु पूजा 'बी'	रतनगढ़
५. मुमुक्षु पूजा 'जे', मुमुक्षु अंकिता, मुमुक्षु सुनीता, मुमुक्षु सुरभि 'सी'	पुर
६. मुमुक्षु सोनम, मुमुक्षु नेकता, मुमुक्षु मनीषा 'पी', मुमुक्षु समता	कटक
७. मुमुक्षु चेतना, मुमुक्षु शिक्षा, मुमुक्षु मिनल, मुमुक्षु आयुषी	तारानगर
८. मुमुक्षु सारिका, मुमुक्षु मनीषा 'डी', मुमुक्षु अंजलि, मुमुक्षु मधुमिता	भायंदर

उपासकगण

१. श्री तोलाराम छाजेड़ (मुम्बई) श्री भरत जैन (मुम्बई)	एरोली	२. श्री दिनेश कोठारी (दुबई) श्री जयंतीलाल बरलोटा (मुम्बई)	अंधेरी
३. श्री महेन्द्र दुगड़ (कोलकाता) श्री नरेन्द्र मुणोत (कोलकाता)	अररिया कोर्ट	४. श्री धनराज छाजेड़ (अहमदाबाद) श्री दिनेश बुरड़ (अहमदाबाद)	बल्लारी
५. श्री राजेन्द्र पुगलिया (बीकानेर) श्री अनुराग बैद (नोखा)	बरेली	६. श्री गौतम बैद मुथा (सूरत) श्री प्रकाश बैद मुथा (बालोतरा)	बड़ोदा
७. श्री पुखराज धोका (सूरत) श्री मीठालाल भोगर (सूरत)	बीड़	८. श्री शांतिलाल कोठारी (मुम्बई) श्री दिनेश कोठारी (केलवा)	भरुंच- अंकलेश्वर
९. श्री शंकरलाल पितलिया (खेड़ब्रह्मा) श्री प्रभुभाई मेहता (भुज)	भट्टूमंडी	१०. श्री ओमप्रकाश जैन (कोटकपुरा) श्री कमल सुराणा (सिरसा)	भवानीगढ़
११. श्री फूलचंद छत्रावत (सूरत) श्री कांतिलाल कावड़िया (सूरत)	भुवनेश्वर	१२. श्री कोमल डांगी (उधना) श्री प्रवीण मेड़तवाल (उधना)	विराटनगर
१३. श्री संजय पारख (कोलकाता) श्री प्रकाश सुराणा (सैंथिया)	बीरगंज	१४. श्री पारसमल दुगड़ (मुम्बई) श्री विनोद बाफना (मुम्बई)	बोईसर
१५. श्री लादूलाल नंगावत (उधना) श्री नेमीचंद कावड़िया (उधना)	बुरहानपुर	१६. श्री मोहनलाल बोथरा(कोलकाता) श्री आनंद लुणिया (कोलकाता)	चास-बोकारो
१७. श्री पुष्पराज सुराणा (कोलकाता) श्री राकेश राखेचा (कोलकाता)	दालखोला	१८. श्री धर्मचंद चपलोत (मरोली) श्री फतहलाल सोलंकी (सूरत)	दापोली
१९. श्री सुरेन्द्र सालेचा (पाली) श्री शांतिलाल भंसाली (जसोल)	डेगाना	२०. श्री ताराचंद बरमेचा (कोलकाता) श्री पंकज दुधेड़िया (कोलकाता)	धरान
२१. श्री प्रकाश सिंघवी (सूरत) श्री सुरेन्द्र बोथरा (सूरत)	दुर्ग-भिलाई	२२. श्री हेमराज सुन्देचा (पाली) श्री मोहनलाल बागरेचा (बालोतरा)	फलसूंड
२३. डॉ. सोहनराज तातेड़ (जोधपुर) श्री मनोज ओस्तवाल (बालोतरा)	फरीदाबाद	२४. श्री रमेश डूंगरवाल (मुम्बई) श्री पंकज कोठारी (झाबुआ)	फतेहाबाद
२५. श्री अशोक सुराणा (गुवाहाटी) श्री प्रकाश सुराणा (कोलकाता)	फारबिसगंज	२६. श्री महेन्द्र कोचर (कोलकाता) श्री प्रकाश गिड़िया (कोलकाता)	गुलाबबाग

२७. श्री रोशनलाल चिप्पड़ (भीलवाड़ा)	ग्वालियर	२८. श्री कांति सिसोदिया (सूरत)	इचलकरंजी
श्री सुरेश बोरदिया (भीलवाड़ा)		श्री अमृत मेहता (सूरत)	
२९. श्री गौतम गादिया (सूरत)	जबलपुर	३०. श्री पवन सेठिया (जालना)	जगदलपुर
श्री मीठालाल सिंघवी (पालघर)		डॉ. संजय हिरण (मुम्बई)	
३१. श्री बाबूलाल बाफना (उधना)	झकनावदा	३२. श्री मोतीलाल जीरावला (गुड़गांव)	जींद
श्री महेशभाई मेहता (सूरत)		श्री गौतम सालेचा (जसोल)	
३३. श्री इंद्राजमल नाहटा (कोलकाता)	जोरहाट	३४. श्री विमल गुनेचा (दिल्ली)	कानपुर
श्री जब्बरमल दुगड़ (कोलकाता)		श्री राकेश सुराणा (कोलकाता)	
३५. श्री चंद्रप्रकाश मेहता (मुम्बई)	करवड़	३६. श्री सुमेर कोचर (गंगावती)	केशकाल
श्री पुखराज बाफना (मुम्बई)		श्री अरविंद डोसी (बेंगलुरु)	
३७. श्री सुभाष समदड़िया (बीड़)	खामगांव	३८. श्री विजयराज सकलेचा (अहमदाबाद)	खारघर
श्री विनोद जोगड़ (लोणार)		श्री धनराज भटेवरा (मुम्बई)	
३९. श्री मालचंद भंसाली (कोलकाता)	किशनगंज	४०. श्री मनोहर गोखरू (मुम्बई)	कीम
श्री गौरव डागा (कोलकाता)		डॉ. सुन्दर इंटोदिया (मुम्बई)	
४१. श्री जवेरीलाल सकलेचा (अहमदाबाद)	कोठारिया	४२. श्री विकास जैन (मुम्बई)	कुरसुड चांदोतारा
श्री खूबीलाल छत्रावत (सूरत)		श्री हस्तीमल डांगी (मुम्बई)	
४३. श्री मोहनलाल सामसुखा (कोलकाता)	लामडींग	४४. श्री नानालाल कोठारी (अहमदाबाद)	महाड़
श्री अनिल बैंगानी (बरपेटा रोड)		श्री छितरमल सिंघवी (मुम्बई)	
४५. श्री अर्जुन सोलंकी (मुम्बई)	मंडया	४६. श्री अरविंद डोसी (भरुंच)	मोडासा
श्री ओमप्रकाश जैन (टिटिलागढ़)		श्री बाबूलाल चोपड़ा (अहमदाबाद)	
४७. श्री सुरेन्द्र सेठिया (कोलकाता)	नगांव	४८. श्री राहुल खोखावत (सूरत)	नालासोपारा
श्री नवरतन मालू (कोलकाता)		श्री विशाल परीख (सूरत)	
४९. श्री विनोद कोठारी (बेंगलुरु)	नंजनगुड	५०. श्री मोहनलाल सकलेचा (सूरत)	नेपानगर
श्री भंवरलाल चोपड़ा (बेंगलुरु)		श्री मनीष मालू (सूरत)	
५१. श्री नरेन्द्र मेहता (भुज)	पालनपुर	५२. श्री शांतिलाल छाजेड़ (आमेट)	पनवेल
श्री खीमराज सालेचा (सूरत)		श्री अशोक इंटोदिया (मुम्बई)	
५३. श्री कमल सेठिया (कोलकाता)	पटना जंक्शन	५४. श्री ओमप्रकाश जैन (दिल्ली)	पटियाला
श्री अरुण नाहटा (कोलकाता)		श्री श्यामसुंदर जैन (सिवानी)	
५५. श्री पारसमल बाफना (बारडोली)	पिंपलनेर	५६. श्री शांतिलाल संचेती (मुम्बई)	पिंपरी चिंचवड़
श्री पारसमल मेहता (बारडोली)		श्री राजेन्द्र मुणोत (मुम्बई)	
५७. श्री डालिमचंद नौलखा (अहमदाबाद)	पूना	५८. श्री विजय बरमेचा (कोलकाता)	रायबरेली
श्री सुशील मेड़तवाल (मुम्बई)		श्री रवि छाजेड़ (कोलकाता)	
५९. श्री इंद्रचंद नाहटा (गंगाशहर)	रायसिंहनगर	६०. श्री रणजीत कोठारी (मुम्बई)	राजनांदगांव
श्री स्वरूप छाजेड़ (बालोतरा)		श्री मुकेश बाबेल (मुम्बई)	
६१. श्री रतनलाल हिरण (मुम्बई)	राजाजीका करेड़ा	६२. श्री हनुमानमल दुगड़ (इरोड)	राउरकेला
श्री रूपचंद गोखरु (मुम्बई)		श्री रमेश पटावरी (इरोड)	

६३. श्री सोहनलाल सिंघवी (मुम्बई) श्री कन्हैयालाल कोठारी (मुम्बई)	रेलमगरा	६४. श्री रतनलाल लोढ़ा (मुम्बई) श्री भगवती चौहान (मुम्बई)	शहादा
६५. श्री जसपाल जैन (उचानामंडी) श्री अशोक जैन (दिल्ली)	शेरपुर	६६. श्री प्रदीप जैन (हांसी) श्री राजकुमार जैन (हिसार)	संगतमंडी
६७. श्री मुनीष जैन (पंचकुला) श्री कमल जैन (पेटलावद)	तपामंडी	६८. श्री सूर्यप्रकाश श्यामसुखा (लुधियाना) श्री राजेन्द्र लुणिया (कटक)	तेजपुर
६९. श्री निर्मल नौलखा (भीनासर) श्री सुनील दुगड़ (पेराम्बक्कम)	तिरुपुर	७०. श्री राजकुमार जैन (दिल्ली) श्री आसकरण आंचलिया (दिल्ली)	उचानामंडी
७१. श्री विनोद बोरदिया (डीसा) श्री रतनलाल मेहता (डीसा)	उज्जैन	७२. श्री गणेश मेहता (नाथद्वारा) श्री सुभाष सामोता (नाथद्वारा)	उकलानामंडी
७३. श्री गौतम भंसाली (मुम्बई) श्री आनंद खतंग (मुम्बई)	उल्लासनगर	७४. श्री उत्तमचंद डागा (अहमदाबाद) श्री अशोक परमार (सूरत)	उरण
७५. श्री महावीर ढेलड़िया (सूरत) श्री ओमप्रकाश मारू (उधना)	उत्केला	७६. श्री धर्मचंद बाफना (अलीपुर द्वार) श्री महेन्द्र बैद (कोलकाता)	वाराणसी
७७. श्री सुरेश बाफना (सूरत) श्री कांतिभाई मेहता (सूरत)	वासी	७८. श्री महेन्द्र सिंघवी (मुम्बई) श्री मुकेश चोरड़िया (मुम्बई)	विजयनगरम
७९. श्री गणपत जैन (मुम्बई) श्री पारसमल संचेती (उधना)	विजयवाड़ा	८०. श्री सुशील बाफना (मुम्बई) श्री महावीर चोरड़िया (मुम्बई)	विरार
८१. श्री अर्जुन मेड़तवाल (उधना) श्री गहरीलाल बाफना (सूरत)	विशाखापट्टनम	८२. श्री राजेश छाजेड़ (सोलापुर) श्री नितीन नौलखा (जालना) श्री पंकज गुलगुलिया (सूरत)	भिंवडी
८३. श्री डालचंद कोठारी (मुम्बई) श्री पंकज चोपड़ा (मुम्बई) श्री विनोद बड़ाला (कांकरोली)	चित्तौड़गढ़	८४. श्री पदमचंद आंचलिया (चेन्नई) श्री अशोक बुरड़ (मैसूर) श्री मांगीलाल पितलिया (चेन्नई)	इरोड
८५. श्री संतोष रांका (पुतूर) श्री संदीप दुगड़ (पेरामबक्कम) श्री नैनमल कोठारी (मदुरै)	मदुरै	८६. श्री राजेन्द्र सेठिया (गंगाशहर) श्री कन्हैयालाल बोथरा (गंगाशहर) श्री धनराज लोढ़ा (मदुरै)	मैसूर
८७. श्री सोहनलाल कोठारी (मुम्बई) श्री पुष्पेन्द्र कावड़िया (मुम्बई) श्री कमल जैन (चित्तौड़गढ़)	नाथद्वारा	८८. श्री सुधांशु चंडालिया (मुम्बई) श्री विकास जैन (मुम्बई) श्री प्रकाश जैन (मुम्बई)	पर्वतपाटिया
८९. श्री महेन्द्र दक (बेंगलुरु) श्री राजेन्द्र कोचर (गंगावती) श्री राजेश आच्छा (मैसूर)	शिमोगा	९०. श्री सुभाष चपलोत (मुम्बई) श्री बाबूलाल बाफना (मुम्बई) श्री प्रकाश धाकड़ (मुम्बई)	सचिन
९१. श्री सुरेश ओस्तवाल (मुम्बई) श्री धनराज मालू (चेन्नई) श्री स्वरूप दांती (चेन्नई)	सेलम	९२. श्री अनिल चंडालिया (उधना) श्री महावीर संचेती (उधना) श्री मिश्रीमल नंगावत (उधना)	वसई

९३. श्री रतन सियाल (मुम्बई) वापी
श्री प्रकाश जैन (मुम्बई)
श्री रमेश सिंघवी (मुम्बई)

उपासिकागण

१. श्रीमती प्रेमलता चोरड़िया (कोलकाता) अगरतला
श्रीमती सरोज भंसाली एम. (कोलकाता)

२. श्रीमती चंदा सुराणा (कोलकाता) अलीपुरद्वार
श्रीमती लीला सुराणा (कोलकाता)

३. श्रीमती भाग्यवती कच्छारा (मुम्बई) अम्बिकापुर
श्रीमती मीना साबद्रा (मुम्बई)

४. श्रीमती इंद्रादेवी दुगड़ (कोलकाता) अररिया
श्रीमती सीमा दुगड़ (कोलकाता) आरएस

५. श्रीमती सुरजीत सिंगला (पंचकुला) बदनीकला
श्रीमती संतोष जैन (जगराओ)

६. श्रीमती बबीता गिड़िया (गुलाबबाग) बहादुरगंज
श्रीमती शकुंतला दुगड़ (इस्लामपुर)

७. श्रीमती वीणा बोथरा (कोलकाता) बलुआ
श्रीमती संजू भादानी (कोकराझार)

८. श्रीमती उषा चोरड़िया (कटक) बालासोर
श्रीमती सुनीता दुगड़ (कटक)

९. श्रीमती मंजू घोड़ावत (कोलकाता) बंगाईगांव द.
श्रीमती सरोज दुगड़ (कोलकाता)

१०. श्रीमती प्रेम सेठिया (भुवनेश्वर) बारीपदा
श्रीमती समता सेठिया (कटक)

११. श्रीमती लीला चोरड़िया (कोलकाता) बरहोला
श्रीमती पुष्पा सेठिया (कोलकाता)

१२. श्रीमती मंजू लुणिया (फरीदाबाद) बरनाला
श्रीमती सरोज सुराणा (दिल्ली)

१३. सुश्री सायर कोठारी (किशनगंज) बरपेटारोड
श्रीमती संतोष श्रीमाल (गुलाबबाग)

१४. श्रीमती चंद्रा पटवारी (मुम्बई) बीजापुर
श्रीमती मंजुला हिरण (मुम्बई)

१५. श्रीमती संजू लालानी (गंगाशहर) भादरा
श्रीमती संतोष गुलगुलिया (खाजूवाला)

१६. श्रीमती विजयलक्ष्मी मणोत (कोलकाता) भवानी पटना
श्रीमती सरोज भंसाली एन (कोलकाता)

१७. श्रीमती उषा जैन (जगराओं) भीखी
श्रीमती कांता जैन (जींद)

१८. श्रीमती पद्मा मेहता (इंदौर) भिलाड़
श्रीमती जयमाला छाजेड़ (उधना)

१९. श्रीमती सुशीला बड़ाला (मुम्बई) बिलासपुर
श्रीमती संगीता चपलोत (मुम्बई)

२०. श्रीमती तारा दुगड़ (कोलकाता) बर्धमान
श्रीमती सारिका बोकड़िया (कोलकाता)

२१. श्रीमती सुधा बांठिया (जयपुर) विजयनगर
श्रीमती ललिता सेठिया (जयपुर)

२२. श्रीमती चंद्रकांता पुगलिया(कोलकाता) बिलासीपाड़ा
श्रीमती चंद्रकला बोथरा (कोलाघाट)

२३. श्रीमती शांति सुराणा (कोलकाता) बिशनपुर
श्रीमती चंद्रकला पुगलिया (सैंथिया)

२४. श्रीमती सरोज बोथरा (कोलकाता) चंगड़ाबांधा
श्रीमती गणपति दुगड़ (कोलकाता)

२५. श्रीमती जयश्री बरमेचा (कोलकाता) छातापुर
श्रीमती कनक गिड़िया (कोलकाता)

२६. श्रीमती तारा बोहरा (हुबली) चिकनायकहाली
श्रीमती पिस्ता तलेसरा (होसपेट)

२७. श्रीमती विमला डागलिया (मुम्बई) दौलतगढ़
श्रीमती चत्तरदेवी सिंघवी (मुम्बई)

२८. श्रीमती सुनिला नाहर (मेहकर) देवलगांवमही
श्रीमती आरती सांखला (भुसावल)

२९. डॉ. सुशीला बाफना (लाडनूं) डीडवाना
श्रीमती शोभा सेठिया (सुजानगढ़)

३०. श्रीमती पुष्पा गोलछा (गुवाहाटी) डिफू
श्रीमती कांता बच्छावत (गुवाहाटी)

३१. श्रीमती सरोज दुगड़ (खारूपेटिया) डिमापुर
श्रीमती कुसुम बैद (खारूपेटिया)

३२. श्रीमती विमला सिंघवी (सूरत) धानेरा
श्रीमती मंजू सिंघवी (सूरत)

३३. श्रीमती सुशीला दुगड़ (फरीदाबाद) धारसूलकलां
श्रीमती विमला सुराणा (दिल्ली)

३४. श्रीमती सरला सुराणा (कोलकाता) धुबड़ी
श्रीमती कुसुम जैन (कोलकाता)

३५. श्रीमती मंजू सेठिया (सूरत) धुलिया
श्रीमती मधु नाहटा (सूरत)

३६. श्रीमती कला बच्छावत (कोलकाता) धुपगुड़ी
श्रीमती पूर्णिमा जैन (कोलकाता)

३७. श्रीमती किरण सुराणा (कोलकाता) दिनहट्टा
श्रीमती कुसुम सिंघी (कोलकाता)

३८. श्रीमती गुलाब चोरड़िया (कोलकाता) फालाकाटा
श्रीमती ममता बोथरा (कोलकाता)

३९. श्रीमती रमा जैन (दिल्ली) फिल्लौर
श्रीमती चंद्रकला लुणिया (दिल्ली)

४०. श्रीमती ललिता दुगड़ (कोलकाता) गौरीपुर
श्रीमती अनिला छाजेड़ (कोलकाता)

४१. श्रीमती प्रभा सेठिया (फारबिसगंज) गुड़ियातम
श्रीमती सुनीता डागा (चेन्नई)

४२. श्रीमती विमला मणोत (कोलकाता) ग्वालपाड़ा
श्रीमती सरला छाजेड़ (कोलकाता)

४३. श्रीमती पुष्पा नौलखा (भीनासर) हनुमानगढ़
श्रीमती संगीता पोरवाल (उदयपुर)

४४. श्रीमती विमला कोठारी (गदग) हावेरी
श्रीमती कमला पालगोता (कोप्पल)

४५. श्रीमती कांता डागा (अहमदाबाद) हिम्मतनगर
श्रीमती सीमा जे. डांगी (उधना)

४६. श्रीमती सरोज सुराणा (हैदराबाद) हुंसुर
श्रीमती रंजू बैद (हैदराबाद)

४७. श्रीमती पुष्पा चोपड़ा (कोप्पल) इलकल
श्रीमती सुमन तातेड़ (हिरयूर)

४८. श्रीमती चंद्रकला कोचर (कोलकाता) इस्लामपुर
श्रीमती सीमा बैद (कोलकाता)

४९. श्रीमती सुखमाल सामसुखा (कोलकाता) जयगांव
श्रीमती वीणा गोलछा (विजयवाड़ा)

५०. श्रीमती मधु जैन (भिवानी) जाखलमंडी
श्रीमती प्रीति जैन (हिसार)

५१. श्रीमती विनोदबाला डागा (अहमदाबाद) जालना
श्रीमती चांद छाजेड़ (अहमदाबाद)

५२. श्रीमती प्रेम बोथरा (जयपुर) जोबनेर
श्रीमती विजया छल्लाणी (जयपुर)

५३. श्रीमती लीला बोथरा (सिलीगुड़ी) जोकीहाट
श्रीमती सुधा बोथरा (फारबिसगंज)

५४. श्रीमती सूरज बोहरा (चेन्नई) केवीकुप्पम
श्रीमती उज्जवल आंचलिया (चेन्नई)

५५. श्रीमती मीना बाफना (नीमच) कल्याणपुरा
श्रीमती प्रमोदिता बोथरा (जावद)

५६. श्रीमती मधु कोठारी (राउरकेला) काकीनाड़ा
श्रीमती सरला चोपड़ा (विजयनगरम)

५७. श्रीमती हिम्मत चोरड़िया (कोलकाता) कालियाचक
श्रीमती सरिता सुराणा (कोलकाता)

५८. श्रीमती राजश्री डागा (चेन्नई) कालीकट
श्रीमती सुप्रिया श्यामसुखा (चेन्नई)

५९. श्रीमती चंद्रा बड़ाला (मुम्बई) कानोड़
श्रीमती मधु पगारिया (कांकरोली)

६०. श्रीमती किरण बरमेचा (तेजपुर) करीमगंज
श्रीमती सरला गुजरानी (नगांव)

६१. श्रीमती लक्ष्मी बरमेचा (कोलकाता) खारूपेटिया
श्रीमती सुनीता छाजेड़ (सैंथिया)

६२. श्रीमती पारस मेहता (मुम्बई) खेड़ा
श्रीमती रेखा धाकड़ (मुम्बई)

६३. श्रीमती निर्मला चंडालिया (मुम्बई) खेड़ब्रह्मा
श्रीमती सीमा सोनी (मुम्बई)

६४. श्रीमती मंजू दुगड़ (कोलकाता) खुटौना
श्रीमती प्रेम सुराणा (कोलकाता)

६५. श्रीमती शांति श्रीमाल (कोलकाता) कृष्णाई
श्रीमती नीलम दुगड़ (कोलकाता)

६६.श्रीमती राजकुमारी सुराणा (कोलकाता) कोकराझार
श्रीमती राजकुमारी सेठिया (कोलकाता)

६७. श्रीमती बबिता तातेड़ (कोलकाता) कोलाघाट
श्रीमती अन्नु सुराणा (कोलकाता)

६८. श्रीमती सरोज ढड्डा (कुडलूर) कुम्भकोणम
श्रीमती सरला मुथा (चेन्नई)

६६. श्रीमती बसंता बाबेल (चेन्नई) कुन्नूर
श्रीमती कल्याणी डूंगरवाल (चेन्नई)

७०. श्रीमती भारती सेठिया (मुम्बई) मडगांव
श्रीमती ममता चोपड़ा (मुम्बई)

७१. श्रीमती पुष्पा धारीवाल (कोलकाता) मालदा
श्रीमती मीना दुगड़ (कोलकाता)

७२. श्रीमती सरोज संचेती (अहमदाबाद) मरोली
श्रीमती प्रेमलता कोठारी (अहमदाबाद)

७३. श्रीमती आशा गुंदेचा (मुम्बई) माणसा
श्रीमती मनीषा मेहता (मुम्बई)

७४. श्रीमती सरोज दुगड़ (कोलकाता) माथाभांगा
श्रीमती मंजू पगारिया (खगड़ा)

७५. श्रीमती रत्ना बड़ाला (मुम्बई) मेघरज
श्रीमती रेखा सिंघवी (मुम्बई)

७६. श्रीमती कोकिला कुंडलिया (कोलकाता) नरपतगंज
श्रीमती तारामणि दुधोड़िया (कोलकाता)

७७. श्रीमती कमलेश नेवटिया (भटिंडा) नाभा
श्रीमती मंजू जैन (तोषाम)

७८. श्रीमती शीला नाहटा (कोलकाता) निर्मली
श्रीमती बेबी सिरोहिया (कोलकाता)

७९. श्रीमती किरण कोठारी (मुम्बई) ओलपाड़
श्रीमती सुधा सियाल (मुम्बई)

८०. श्रीमती पुष्पा कुंडलिया (गुडगांव) पंचकुला
श्रीमती फूल कोठारी (दिल्ली)

८१. श्रीमती मंजू पिपाड़ा (कल्याणपुरा) पाटन
श्रीमती पुष्पा चोपड़ा (अहमदाबाद)

८२. श्रीमती विनोददेवी सुराणा (लुधियाना) पातड़ा
श्रीमती संगीता तातेड़ (दिल्ली)

८३. श्रीमती कमला बांठिया (कोलकाता) पूर्णिया
श्रीमती ज्योति पुगलिया (सैंथिया)

८४. श्रीमती शारदा पुगलिया (कोलकाता) रायगंज
श्रीमती अनीता सुराणा (कोलकाता)

८५. श्रीमती नेमकंवर जीरावला (सूरत) सफाला
श्रीमती दीपमाला खोखावत (सूरत)

८६. श्रीमती वीणा मेहता (मुम्बई) सलाल
श्रीमती समता जैन (मुम्बई)

८७. श्रीमती राज गुनेचा (दिल्ली) समाना
श्रीमती मंजू नाहटा (दिल्ली)

८८. श्रीमती पुखराज सेठिया (कोलकाता) सैंथिया
श्रीमती पंकज दुगड़ (कोलकाता)

८९. श्रीमती सरिता सामसुखा (कोलकाता) शिलोंग
श्रीमती रेखा बैंगानी (कोलकाता)

९०. श्रीमती रजनी दुगड़ (अहमदाबाद) सोलापुर
श्रीमती उर्मिला घीया (इंदौर)

९१. श्रीमती भारती जैन (जगदलपुर) सूरजपुर
श्रीमती सुधा कातरेला (विशाखापट्टनम)

९२. श्रीमती प्रेमलता नाहर (अंकलेश्वर) तलोद
श्रीमती मंजू गंग (कामरेज)

९३. श्रीमती कोकिला सुराणा (गुवाहाटी) तिनसुकिया
श्रीमती ललिता श्यामसुखा (गुवाहाटी)

९४. श्रीमती मनीषा सुराणा (कोलकाता) तूफानगंज
श्रीमती मधु छाजेड़ (सैंथिया)

९५. श्रीमती इंदू बड़ाला (मुम्बई) वेशमा
श्रीमती संजू दुगड़ (मुम्बई)

९६. श्रीमती आशा चोरड़िया (बारडोली) भिलोड़ा
श्रीमती मंजू बापना (मुम्बई)

९७. श्रीमती ललिता बरलोटा (कोयम्बत्तूर) आरकोणम
श्रीमती सुशीला बाफना (कोयम्बत्तूर)
श्रीमती कांता सिंघवी (चेन्नई)

९८. श्रीमती शारदा मेहता (मुम्बई) बाजीपुरा-व्यारा
श्रीमती रसीला पामेचा (मुम्बई)
श्रीमती पुष्पा कोठारी (मुम्बई)

९९. श्रीमती सविता बोहरा (केलवा) बकानी
श्रीमती रेखा कोठारी (केलवा)
श्रीमती मीना चपलोत (केलवा)

१००. श्रीमती जतन कोठारी (पटना) बंगाईगांव उ.
श्रीमती मंजू दुगड़ (गुवाहाटी)
श्रीमती सीमा डूंगरवाल (यमुनानगर)

१०१. श्रीमती सरोज बोरदिया (भीलवाड़ा) बरार
श्रीमती चंद्रकांता चोरड़िया (भीलवाड़ा)
श्रीमती सुधा बाफना (डीसा)

१०२. श्रीमती शोभा डागा (बालोतरा) बायतू
श्रीमती निर्मला संकलेचा (बालोतरा)
श्रीमती रेखा श्रीश्रीमाल (बालोतरा)

१०३. श्रीमती संतोष बांठिया (कोलकाता) बेलडांगा
श्रीमती ललिता बैद (कोलकाता)
श्रीमती अंजू चोरड़िया (कोलकाता)

१०४. श्रीमती दमयंती गेलड़ा (शहादा) अम्बाजोगई
श्रीमती मीना संचेती (शहादा)
श्रीमती साधना गेलड़ा (शहादा)

१०५. श्रीमती निर्मला नौलखा (मुम्बई) भीम
श्रीमती इंदिरा धींग (मुम्बई)
श्रीमती पुष्पा तलेसरा (नाथद्वारा)

१०६. श्रीमती लीला सालेचा (मुम्बई) भुसावल
श्रीमती लक्ष्मी मेहता (मुम्बई)
श्रीमती लक्ष्मी गेलड़ा (शहादा)

१०७. श्रीमती तारा चौधरी (मुम्बई) बोरी
श्रीमती नीना बापना (मुम्बई)
श्रीमती ललिता बापना (मुम्बई)

१०८. श्रीमती रचना हिरण (मुम्बई) चलथान
श्रीमती चंदा धाकड़ (मुम्बई)
श्रीमती मंजू हिरण (मुम्बई)

१०९. श्रीमती कमला चोरड़िया (मुम्बई) चीखली
श्रीमती भावना सांखला (मुम्बई)
श्रीमती लीला सोनी (मुम्बई)

११०. श्रीमती बेबी धारीवाल (चेन्नई) चित्रदुर्गा
श्रीमती विमला लोढ़ा (चेन्नई)
श्रीमती राजश्री पुगलिया (कालीकट)

१११. श्रीमती लीला मेहता (सूरत) दाहोद
श्रीमती रेखा मेड़तवाल (सूरत)
श्रीमती हेमलता मादरेचा (मुम्बई)

११२. श्रीमती पुष्पा मेहता (मुम्बई) दावणगेरे
श्रीमती भावना बाफना (चित्रदुर्ग)
श्रीमती दीपिका बाफना (चित्रदुर्ग)

११३. श्रीमती शांता नौलखा (लावा-सरदारगढ़) डीसा
श्रीमती बसंत कंठालिया (उदयपुर)
श्रीमती चंचल कोठारी (मुम्बई)

११४. श्रीमती कुसुम जैन (पोंडा गोवा) धारवाड़
श्रीमती अनिता नाहर (सिंधनूर)
श्रीमती डिंपल जीरावला (सिंधनूर)

११५. श्रीमती हेमलता परमार (अहमदाबाद) फतेहनगर
श्रीमती पिस्ता छाजेड़ (अहमदाबाद)
श्रीमती प्रतिक्षा सुतरिया (अहमदाबाद)

११६. श्रीमती सरोज छाजेड़ (बेल्लारी) गंगावती
श्रीमती कविता बाफना (चित्रदुर्ग)
श्रीमती देविका बाफना (हिरीयूर)

११७. श्रीमती रंजू आच्छा (चिकमंगलूर) होसपेट
श्रीमती अमृता जैन (कोप्पल)
श्रीमती सुवर्णा कोठारी (शिमोगा)

११८. श्रीमती मंजू लुणिया (बेंगलुरु) केआर नगर
श्रीमती सुमित्रा चोपड़ा (हिरीयूर)
श्रीमती सीमा चोपड़ा (हिरीयूर)

११९. श्रीमती लता परमार (चेन्नई) कांचीपुरम
श्रीमती संगीता बरड़िया (चेन्नई)
श्रीमती श्रीलता लुंकड़ (चेन्नई)

१२०. श्रीमती सरोज बांठिया (सूरत) कामरेज
श्रीमती आनंदी सिंघवी (गांधीधाम)
श्रीमती कनक बरड़िया (सूरत)

१२१. डॉ. बीरबाला छाजेड़ (इंदौर) केसूर
श्रीमती उषा डागा (इंदौर)
श्रीमती सरिता बीकानेरिया (जावद)

१२२. श्रीमती पुष्पा बरड़िया (हैदराबाद) कोप्पल
श्रीमती अंजू बैद (हैदराबाद)
श्रीमती प्रेम संचेती (हैदराबाद)

१२३. श्रीमती रूपा धोका (औरंगाबाद) लातूर
श्रीमती स्वरूप पिपाड़ा (जालना)
श्रीमती अनिता जोगड़ (जालना)

१२४. श्रीमती अनिता सियाल (मुम्बई) मनमाड
श्रीमती कविता हिरण (मुम्बई)
श्रीमती प्रेमा धाकड़ (मुम्बई)

१२५. श्रीमती राजेश्वरी तातेड़ (गुंटकल) मानवी
श्रीमती सरस्वती कोठारी (गदग)
श्रीमती देवी भंसाली (इचलकरंजी)

१२६. श्रीमती प्रतिभा चोपड़ा (मुम्बई) नवसारी
श्रीमती सीमा कोठारी (मुम्बई)
श्रीमती पिस्ता परमार (मुम्बई)

Postal Reg. No. DL (C)-01/1243/2018-20 Wed.-Thu.
L.No.-U (C) 200/2018-2020
Licence to Post without Pre-payment
Regd. No. 61758/95 Office of Posting N.D.P.S.O.

१२७. श्रीमती विमला दुगड़ (मुम्बई)	नासिक	१२८. श्रीमती वीणा भांडिया (मुम्बई)	नीमच
डॉ. सरोज मालू (मुम्बई)		श्रीमती संतोष धारीवाल (मुम्बई)	
श्रीमती संगीता सूर्या (धुलिया)		श्रीमती गुलाब बच्छावत (सुजानगढ़)	
१२९. श्रीमती रेखा पितलिया (बेंगलुरु)	रायचूर	१३०. श्रीमती सुमित्रा बरड़िया (बेंगलुरु)	राजमुंद्री
श्रीमती रेखा पोरवाल (बेंगलुरु)		श्रीमती भंवरी बाई हिंगड़ (के.जी.एफ.)	
श्रीमती अरुणा संचेती (बेंगलुरु)		श्रीमती सुमन सेठिया (हैदराबाद)	
१३१. श्रीमती मंजू गन्ना (बेंगलुरु)	सवदत्ती	१३२. श्रीमती मीना मेहता (सूरत)	सायण
श्रीमती ललिता भंसाली (मंडया)		श्रीमती शांता मेहता (सूरत)	
श्रीमती मधुलता कोठारी (मंडया)		श्रीमती कुसुम इंटोदिया (मुम्बई)	
१३३. श्रीमती मंजू गेलड़ा (अहमदाबाद)	सेलवास	१३४.श्रीमती कुसुमलता चोरड़िया(चेन्नई)	सिवाकाशी
श्रीमती संगीता सिंघवी (अहमदाबाद)		श्रीमती राजूकला पारख (चेन्नई)	
श्रीमती सेजल माण्डोत (अहमदाबाद)		श्रीमती सीमा बड़ोला (चेन्नई)	
१३५. श्रीमती सज्जन नाहर (चेन्नई)	त्रिची	१३६. श्रीमती सुशीला सिंघवी (मुम्बई)	वलसाड़
श्रीमती प्रीति छाजेड़ (चेन्नई)		श्रीमती ललिता छाजेड़ (मुम्बई)	
श्रीमती संगीता डागा (चेन्नई)		श्रीमती तारा धाकड़ (मुम्बई)	
१३७. श्रीमती सुबोध सेठिया (चेन्नई)	विल्लीपुरम	१३८. श्रीमती स्नेहलता समदड़िया (बड़ोदा)	वीरपुर
श्रीमती संतोष सुराणा (चेन्नई)		श्रीमती मंजू श्रीमाल (बड़ोदा)	
श्रीमती प्रीति छाजेड़ (चेन्नई)		श्रीमती सीमा एम डांगी (उधना)	

मुनि दीक्षा एवं प्रतिक्रमण आदेश

२५ अगस्त। परम पूज्य आचार्यप्रवर ने मुमुक्षु कुणाल सामसुखा (चेन्नई) तथा मुमुक्षु खुश बाबेल (चेन्नई) को २० अक्टूबर को बेंगलुरु में आयोज्य दीक्षा समारोह में मुनि दीक्षा प्रदान करने की घोषणा करते हुए उन्हें साधु प्रतिक्रमण सीखने की अनुमति प्रदान की।

दीक्षा समारोह एवं दीक्षाओं की घोषणा

परम श्रद्धास्पद आचार्यप्रवर ने माघ कृष्णा नवमी तदनुसार १८ जनवरी २०२० को गदग में मध्याह्न करीब १२.१५ बजे से ३.०० बजे तक दीक्षा समारोह (वर्धमान महोत्सव के साथ) आयोजित करने तथा उसमें मुमुक्षु रौनक बाफना (अषाढ़ा), मुमुक्षु श्रुति चोपड़ा (कोप्पल) तथा मुमुक्षु सोनम पालगोता (हुबली) को साध्वी दीक्षा प्रदान की घोषणा करते हुए उन्हें साध्वी प्रतिक्रमण सीखने की स्वीकृति प्रदान की है।

विज्ञप्ति के संदर्भ में पत्र व्यवहार का पता एवं संपर्क सूत्र

जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा, 3 पोर्चुगीज चर्च स्ट्रीट, कोलकाता 700001
मो.नं. - 7044778888 Email : vigyapti@terapanthinfo.com

ऑनलाइन विज्ञप्ति Terapanth मोबाईल एप तथा www.terapanthinfo.com पर उपलब्ध

जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक- संजय खटेड़ द्वारा पवन प्रिंटर्स, जे-9 नवीन शाहदरा, दिल्ली से मुद्रित तथा अणुव्रत भवन, 210 दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली- 110002 से प्रकाशित। सम्पादक : छगनसिंह सांखला